ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 59-61

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भारत की कला एवं संस्कृति के विकास में मगध का योगदान

रंजन कुमार

यू.जी.सी. नेट शोध अध्येता– इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया सह, प्रधानाध्यापक मद्गविद्ग नावाखाप, इमामगंज, गया (बिहार), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 10.08.2020, Accepted - 15.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : ***मगध शब्द का प्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिला है। मगध क्षेत्र वर्तमान बिहार का दक्षिणी भाग है, जो गंगा के दक्षिणी मैदानी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। मगध में मूल रूप से पटना, गया, नालंदा, नवादा और औरंगाबाद के क्षेत्र स्थित है। बौद्ध साहित्य अंगुत्तर निकाय और जैन साहित्य 'भगवती सुत्र' के अनुसार भारत के राजनीतिक क्षितिज पर मगध साम्राज्य का उदय छठी शताब्दी ई०पू० में हुआ। 16 महाजन पदों में मगध साम्राज्य सर्वशक्तिमान था। मगध को भारत का प्रथम साम्राज्य होने का गौरव प्राप्त है। मगध में बिम्बिसार अजातशत्रु, उदयन, चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक सम्राट जैसे अनेक प्रतापी राजा हुए, जिन्होंने मगध को उसकी मूल सीमा से निकालकर न सिर्फ सम्पूर्ण भारत में, बल्कि विदेशों में भी फैलाने का काम किया था। इन राजाओं ने कला को संरक्षण दिया एवं नव संस्कृति की स्थापना और उसे कालजयी बनाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया था।***

कुंजीभूत शब्द– अथर्ववेद, मैदानी क्षेत्र, अन्तर्गत, साहित्य अंगुत्तर, जैन साहित्य, राजनीतिक क्षितिज, साम्राज्य ।

यों तो प्राचीन भारत के इतिहास में कला एवं संस्कृति के स्मृति चिन्ह् सिंधु घाटी सभ्यता एवं उससे कहीं पहले से ही दृष्टिगोचर होते है, परन्तु वास्तव में मगध साम्राज्य के उत्थान के बाद कला एवं संस्कृति का जो विकास देखने को मिलता है, वह प्रामाणिक और अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है। मगध में मौर्य साम्राज्य की स्थापना के पहले की जो कलाएँ थी, उनके प्रमाण न के बराबर मिलते हैं, मौर्य साम्राज्य में कलात्मक वस्तुओं के निर्माण में पाषाण का प्रयोग आरंभ हो गया, इसलिए उनके अवशेष पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में हमें आज भी उपलब्ध हैं, जिनके आधार पर उस समय की कला एवं संस्कृति पर वृहत्तर प्रकाश डाला जा सकता है।

मौर्यकाल में मगध में कला के दो रूप देखने को मिलते है – 1. राजकीय अथवा दरबारी कला एवं 2. लोककला एवं मूर्तिकला।

मगध में कला की प्रगति के स्पष्ट साक्ष्य लगभग चौथी शताब्दी ई०पू० से उपलब्ध होने लगते हैं। उस समय वास्तुकला की विशेष प्रगति हुई। मौर्यकालीन स्थापत्य कला के अवशेष पटना एवं राजगीर में तथा बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ियों में देखे जा सकते हैं, पटना के दक्षिणी भाग में कुम्हरार से एक विशाल कक्ष के अवशेष मिले हैं, जिसमें अस्सी स्तंभ थे। यह संभवतः मौर्यो का राजप्रासाद था या– फिर सभागार था। इसके गोलाकार खम्भे पत्थर की एक ही शिला को काटकर बनाए गए है, जिसमें कोई जोड़ नहीं है। इस खम्भे पर चमकीली पॉलिश का प्रयोग हुआ है, जिससे उसकी चमक आज भी फीकी नहीं पड़ी है। 1.चमकीली पॉलिशयुक्त यह खम्भा मगध में वास्तुकला के विकास की कहानी बयाँ करने के लिए आज भी कुम्हरार में मौजूद है।

अशोक द्वारा बनवाए गए स्तंभ जो बिहार जगहों पर पाए गए है– 1.लौरिया नंदनगढ़, 2.लौरिया अरेराज, 3.रामपूरवा और 4. बसाढ़ में, ये स्तंभ चुनार से मँगवाए गए घूसर बालू के पत्थरों से बने हैं। ये स्तंभ काफी उँचे–उँचे है, जिसके शीर्ष पर पशुओं के आकार एवं नीचे में उल्टे कमल के फूल का आसन बना है। इन पर भी पॉलिश का प्रयोग हुआ है। सम्राट अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने आजीवक सम्प्रदाय के भिक्षुओं के रहने के लिए बिहार बनवाए थे। इन सुन्दर गुफाओं का एक समूह गया से उत्तर की दिशा में 16 मील की दूरी पर स्थित बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ियों में प्राप्त हुआ है। यहाँ प्राप्त गुफाओं में सुदामा गुफा, कर्णचौपड़, विश्वझोपड़ी गुफा सर्वाधिक प्रसिद्ध है। ये गुफाएँ यद्यपि साज–सज्जा से नितान्त विहीन हैं, तथापि समस्त गुफाओं में भलीभँति पॉलिश का प्रयोग हुआ है, जिस वजह से इनकी उत्कृष्टता आज भी जस की तस बनी हुई है।

अशोक द्वारा बनवाए गए स्तूप एवं पाषाणवेदिका मौर्यकालीन कला के अन्य उदाहरण हैं। स्तूप जो ईट एवं प्रस्तर के बने ठोस गुम्बद होते थे, जिसका उपयोग बौद्ध और जैन ध र्ममतावलम्बी स्मारक स्वरूप करते थे। पाषाण वेदिका स्तूप के चारों ओर प्रस्तर से घिरी संरंचना थी। बोधगया में पाषाण वेदिका के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

पाटलिपुत्र की खुदाई में भी तीन पाषाण वेदिकाओं के टुकड़े मिले हैं, जिन पर चमकीली पॉलिश का प्रयोग

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

हुआ है।

मगध में इंजीनियरिंग कला का विकास भी अभूतपूर्व ढंग से हुआ था। खासकर अशोक के समय के इंजीनिय बड़े ही कुशल थे। यही कारण है कि ये करीब 50–50 टन के विशालकाय स्तंभ के टुकड़ों को पहाड़ से काटकर दूर–दूर तक ले जाने में सफल हुए थे। मौर्यकाल में ही सुदर्शन झील का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से किया गया था। डॉ० राधा कुमुद मुकर्जी ने लिखा है कि– "मौर्य–काल के इंजीनियर नगर योजनाएँ बनाने में भी निपुण थे। मेगास्थनीज का कहना है कि–" पाटलिपुत्र का नगर एक निश्चित योजना के अनुसार बनाया गया था।

मगध में मौर्य के बाद शुंगों एवं कुषाणों के काल में भी कला विकसित होती रही, परन्तु उनमें मौर्यकालीन कलात्मकता दृष्टिगोचर नहीं होती। गुप्तकाल में जाकर पुनः कला अपने चरमोत्सर्ग पर पहुँचती है। कला का हर क्षेत्र गुप्तकाल में परिपक्वास्था में दृष्टिगोचर होता है। चाहे वास्तुकला का का क्षेत्र हो, चाहे स्थापत्यकला या मूर्तिकला का क्षेत्र हो, संगीत कला या नाटक कला का क्षेत्र हो या फिर चित्रकला का क्षेत्र हो। कला का सर्वांगीण विकास गुप्तकाल में ही दिखाई पड़ता है। 4. गुप्तकाल की मूर्तिकला मथुरा कला से प्रेरित और प्रभावित थी। गुप्तकाल, की मूर्तिकला के नमूने बिहार के रोहतास, भोजपूर, नालंदा, राजगीर, गया, वैशाली, सुल्तानगंज, पटना आदि क्षेत्रों से प्राप्त हुए है।

संगीत–नृत्य के क्षेत्र में मगध का इतिहास भरा–पूरा है। महात्मा बुद्ध के समय राजगीर और वैशाली संगीत–नृत्य का प्रमुख केन्द्र स्थल था। यहाँ एक से बढ़कर एक नृत्यांगनाएँ थी, जिन्हें नगर शोभिनी कहा गया है। वैशाली की राजनर्तकी आम्रपाली द्वारा महात्मा बुद्ध से दीक्षा लेने का प्रमाण भी मौजूद हैं। 3. विशाल साम्राज्य के साथ–साथ राजनर्तकियों की परम्परा और भी विकसित होती चली गई।

किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन की पहचान करने में उस क्षेत्र की बौद्धिक विरासत के साथ–साथ कला, पर्व त्योहार मेले–उत्सव, लोगों का रहन–सहन और वहाँ की सामाजिक परंपराओं का भी विशेष स्थान होता है। हमने देखा कि मगध की कलात्मक सम्पदा कितनी समृद्ध थी। अब हम मगध की संस्कृति का अवलोकन करेंगें। मगर इससे पहले हम इससे संबंधित श्रोतों का उल्लेख करना चाहेंगे। हमारे पास मगध की संस्कृति से संबंधित जो श्रोत उपलब्ध हैं, वे मौर्यकाल से प्रारंभ होते है। इनमें कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र', मेगास्थनीज की 'इंडिका' और अशोक के अभिलेख, स्तूप एवं स्तंभ, गुफा, मूर्तियाँ आदि महत्वपूर्ण हैं। रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से भी हमें महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

मेगास्थनीज के अनुसार समाज सात वर्गो में बँटा था 1. दार्शनिक, 2. कृषक, 3. अहीर या गड़ेरिया या चरवाहा, 4. कारीगर, 5. सैनिक, 6. निरीक्षक एवं 7. सभासद या शासकवर्ग। परन्तु कौटिल्य ने मगध में समाज के चार वर्गो का उल्लेख किया है–1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य और 4. शूद्र साथ ही कौटिल्य ने इन चारों वर्गो में प्रचलित आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया हैं जो इस प्रकार है– 1. ब्रह्मण विवाह, 2. दैव विवाह, 3. आर्श विवाह, 4. प्रजापत्य विवाह, 5. असुर विवाह, 6. गन्धर्व विवाह, 7. राक्षस विवाह 8.पैशाच विवाह। विवाह के इन आठ प्रकारों में प्रथम चार प्रकार को धर्मसम्मत माना जाता था, शेष चार प्रकार के विवाह को धर्मविरूद्ध माना जाता था।

मेगास्थनीज और कौटिल्य दोनों ने विवाह के संबंध में यह उल्लेख किया है कि विवाह अपनी जाति के अन्दर ही करने होते थे। ऐसा न करने पर जाति से निष्कासित कर दिया जाता था और उन्हें निम्न कोटि में रखकर उसके साथ निष्ठुर व्यवहार किए जाते थे। जहाँ तक स्त्रियों की दशा का प्रश्न है तो समाज में स्त्रियों की दशा भी संतोषजनक थी। पुरूषों की ही तरह स्त्रियों को भी पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता थी। पिता की संपत्ति में स्त्रियों की भी भागीदारी होती थी। कई स्त्रियाँ विवाह न कर गणिका के रूप में जीवन निर्वाह करने के लिए स्वतंत्र थी। कई स्त्रियाँ अपना बौद्धिक जीवन व्यतीत करती थी। कई स्त्रियाँ सन्यासिनी के रूप में समाज में स्थापित थी, कई शिक्षिकाएँ थी और स्त्रियाँ सैनिक वृत्ति को भी अपनाती थी। मेगास्थनीज ने लिखा है कि–

5. समाज में दास प्रथा तो थी, परन्तु दासों के साथ अच्छे सलूक किये जाते थे। मेगास्थनीज के अनुसार– "भारत में सभी लोग समान हैं, उसमें कोई दास नहीं है।" परन्तु कौटिल्य ने लिखा है कि–"किसी भी परिस्थिति में आर्यो के लिए दासता नहीं होगी।" वहीं अशोक ने दासों एवं सेवकों के साथ अच्छे व्यवहार करने का आदेश अपने कर्मचारियों को दिया था, ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

मेगास्थनीज ने लिखा है कि भारत के लोग अकेले में भोजन करते थे और भोजन करने का कोई निश्चित नियम नहीं था, वे जब चाहे तब भोजन करते थे। 6. स्वादु–भोजन ज्यादा पसन्द करते थे। उनका मुख्य भोजन भात और उस पर मसालेदार माँस था।

लोग माँसाहारी थे, परन्तु जो लोग बौद्ध और जैन धर्म से प्रभावित थे, वे शाकाहारी भोजन करते थे। शाकाहार

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

में गेहूँ की रोटी और सब्जियाँ ली जाती थी। अशोक ने जब बौद्ध धर्म को ग्रहण किया तो शाही भोजनालय में माँसाहार पर प्रतिबंध लगा दिया था।

मगध में लोगों का जीवन सुखी और आमोद प्रमोद से परिपूर्ण था। गाना बजाना, नृत्य, नाटक, जुआ, शिकार आदि आमोद प्रमोद के कई साधन थे। 7. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नटों, नर्तको, गायकों, वादकों, तरह–तरह की बोलियाँ बोलकर आजीविका कमानेवाले, रस्सी पर नाचनेवालों, मदारियों और चारणों का उल्लेख है।

मेगास्थनीज ने लिखा है कि लोगों का नैतिक स्तर काफी उँचा था। साधारणतः लोग झूठ चोरी आदि से घृणा करते थे। धार्मिक अनुष्ठानों के समय लोग मदिरा का सेवन नहीं करते थे। सबसे उल्लेखनीय बात तो यह थी कि मगध काल में लोगों के घरों में ताले लगाए जाते थे। लोग बड़े इमानदार होते थे और उनमें झगड़े भी बहुत कम होते थे। न्यायालय में लोग बहुत कम जाते थे। 8. लोग सच्चाई और सादाचार पर बड़ा जोर देते थे।

विभिन्न धर्मों के आलोक में हम देखते हैं कि मगध में एक साथ कई संस्कृति प्रस्फुटित, पुष्पित, पल्लवित एवं फली–फूली। प्राचीन काल से चली आ रही वैदिक संस्कृति के माननेवालों की संख्या सर्वाधिक थी। वैदिक संस्कृति शनैः शनैः ब्राह्मण संस्कृति का रूप लेती जा रही थी, जिसमें यज्ञ, विभिन्न कर्मकाण्डों एवं पशुबलि की प्रधानता थी। यों तो असंख्य देवताओं की पूजा होती थी, यथा जयन्त, बैजयन्त, शिव, अश्विन, इन्द्र, ब्रहम, विष्णु, यम, कृष्ण आदि। परन्तु इनमें शिव और कृष्ण की पूजा सर्वाधिक होती थी। नदियों का पानी पवित्र समझकर लोग उसकी पूजा करते थे। उस समय गंगा का पानी बहुत ही पवित्र माना जाता था और लोग गंगा को देवी–स्वरूप मानकर उसकी पूजा करते थे।

मगध की संस्कृति को अगर सबसे अधिक किसी धर्म ने प्रभावित किया तो वह बौद्ध धर्म था। बौद्ध धर्म अहिंसा पर आधारित मध्यममार्गी धर्म था। इस धर्म ने वर्षो से चली आ रही बुराईयों यथा–रूढ़िवाद, धार्मिक कर्मकाण्डों अंधविश्वासों एवं जाति व्यवस्था पर जमकर कुठाराघात किया। यह मगध में न सिर्फ राजधर्म के रूप में प्रतिस्थापित हुआ था, बल्कि यह सर्वसाधारण का धर्म बन गया था। जीवन वें प्रायः सभी पहलुओं को इस धर्म ने प्रभावित हुए बिना नहीं रहें। बौद्ध धर्म ने मगध में राजनीति, कला, धर्म एवं संस्कृति समृद्ध तो थी ही साथ–साथ यह बहुआयामी भी थी, कालांतर में भले अन्य क्षेत्रों में कला एवं संस्कृति का विकास ज्यादा परिपक्वावस्था में दृष्टिगोचर हुआ, परन्तु यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि बाद में उभरने वाली कला एवं संस्कृति के लिए मगध की कला एवं संस्कृति ने एक ठोस आधारस्तंभ का काम किया, जिसकी बुनियाद पर भारत में कला एवं संस्कृति खूब फली–फूली। सचमुच! मगध की कला एवं संस्कृति प्राचीन भारत के इतिहास में अद्भूत, अमिट, अविस्मरणीय और द्वितीय थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्री माली, प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली। संस्करण 1981 पृष्ठ सं० 196
2. वहीं..... पृष्ठ सं0 217
3. कमर अहसन, इमत्याज अहमद, बिहार एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशन, खजाँची रोड़, पटना। पुनरीक्षित संस्करण 2016, पृष्ठ सं0 120
4. ए0एल0 बाशम, अद्भूत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा 3 पृष्ठ सं0 252
5. वही..... पृष्ठ सं0 255
6. श्रामशरण शर्मा, प्राचीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली संस्करण 2003, पृष्ठ सं0 144
7. बी0डी0 महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, एस0 चन्द एण्ड कंपनी प्रा0 लिमिटेड नई दिल्ली, संस्करण 2016 पृ0 सं0 217
8. वही..... पृ0 सं0 222 एवं 223
9. डॉ0 एम0सी0 श्रीवास्तव भारत का सांस्कृतिक इतिहास शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 2015 पृ0 सं0 251, 252
10. वही..... पृ0 सं0 292
11. रमेश चन्द्र मजुमदार, हेमचन्द्र राय चौधरी, कालिर्डिकर दत्त, भारत का वृहत् इतिहास (प्राचीन भारत) मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, मद्रास, संस्करण 1989, पृ0 सं0 111
12. वही..... पृ0 सं0 112
13. डॉ0 एस0सी0 राय चौधरी सम्पूर्ण भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास सुरजीत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली संस्करण 2016, पृ0 सं0 244
14. सत्येतु विद्यालंकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली संस्करण 2016, पृ0 सं0 389
15. वही..... पृ0 सं0 393

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*